अध्याय 9: राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

विषय-सूची — 9 प्रश्नावली · 18 प्रश्न

प्रश्नावली 9.1	मेरे उत्तर मेरे तर्क (बहुविकल्पीय)	5 प्रश्न
प्रश्नावली 9.2	मेरी समझ मेरे विचार	4 प्रश्न
प्रश्नावली 9.3	कविता का सौंदर्य — संवादों की विशेषता	1 प्रश्न
प्रश्नावली 9.4	भाव-पहचान एवं विश्लेषण	3 प्रश्न
प्रश्नावली 9.5	व्याकरण की बात — काव्य-विशेषताएँ	1 प्रश्न
प्रश्नावली 9.6	बहुभाषिकता — अवधी शब्द और खड़ी बोली रूप	1 प्रश्न
प्रश्नावली 9.7	लोक में भाषा — लोकोक्तियाँ	1 प्रश्न
प्रश्नावली 9.8	गद्य-रूप	1 प्रश्न
प्रश्नावली 9.9	गतिविधि — कौन-सा कथन किसका	1 प्रश्न

प्रश्नावली 9.1 — मेरे उत्तर मेरे तर्क (बहुविकल्पीय)

प्रश्न 1

"पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करन सब दंड प्रनामा।।" यह पंक्ति सभा में उपस्थित लोगों की किस मनःस्थिति को दर्शाती है? (क) आदर और सम्मान (ख) भक्ति और श्रद्धा (ग) भय और शिष्टाचार (घ) प्रेम और सहिष्णुता

हल

सही उत्तर: (ग) भय और शिष्टाचार।
परशुराम का भयंकर रूप देखकर सभी राजा भयभीत हो गए। भय के कारण वे अपने पिता सहित अपना-अपना नाम बताते हुए दंडवत प्रणाम करने लगे — यह कोई स्वाभाविक आदर नहीं, बल्कि भयजनित शिष्टाचार था। आदर (क) और भक्ति (ख) स्वेच्छा से होते हैं; यहाँ राजाओं की क्रिया परशुराम के कराल रूप के आतंक से उत्पन्न थी। प्रेम (घ) का तो कोई प्रश्न ही नहीं।

उत्तर: (ग) भय और शिष्टाचार — परशुराम के भयावह रूप के कारण राजा डरकर नाम बताते हुए दंडवत प्रणाम करने लगे।

प्रश्न 2

"जनक बहोरि आइ सिरु नावा। सीय बोलाइ प्रनामु करावा" पंक्ति से राजा जनक के व्यवहार की कौन-सी विशेषता उद्घाटित होती है? (क) संवेदनशीलता (ख) शिष्टता (ग) सहनशीलता (घ) उदासीनता

हल

सही उत्तर: (ख) शिष्टता।
राजा जनक ने स्वयं आकर सिर नवाया और सीता को बुलाकर परशुराम को प्रणाम कराया — यह सद्व्यवहार और

मर्यादापूर्ण आचरण की निशानी है। विश्वामित्र जैसे महाऋषि का आगमन होने पर उचित शिष्टाचार का पालन करना जनक का स्वाभाविक गुण है।

संवेदनशीलता (क) का यहाँ प्रदर्शन नहीं; सहनशीलता (ग) बाद में भय के संदर्भ में दिखती है; उदासीनता (घ) तो बिल्कुल नहीं।

उत्तर: (ख) शिष्टता — जनक ने स्वयं आकर सिर नवाया और सीता से प्रणाम कराया, जो उनकी विनम्र और शिष्ट प्रकृति को दर्शाता है।

प्रश्न 3

"अति रिस बोले बचन कठोरा।" जनक के प्रति परशुराम के कठोर वचन बोलने का मूल कारण था— (क) उचित आदर-सत्कार न मिलना (ख) जनक द्वारा समाचार छिपाना (ग) शिव-धनुष का खंडित होना (घ) अन्य राजाओं की सभा में उपस्थिति

हल

सही उत्तर: (ग) शिव-धनुष का खंडित होना।

परशुराम शिव के परम भक्त थे। जब उन्होंने धनुष के टुकड़े जमीन पर पड़े देखे तो तीव्र रोष प्रकट हुआ। जनक द्वारा स्वयंवर की जानकारी देने के बाद परशुराम ने धनुष खंडित देखा और क्रोध में जनक से पूछा — 'कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा।'

उचित सत्कार (क) या जानकारी छिपाना (ख) का उल्लेख कविता में नहीं है। राजाओं की उपस्थिति (घ) भी मूल कारण नहीं।

उत्तर: (ग) शिव-धनुष का खंडित होना — परशुराम शिव-धनुष को खंडित देखकर अत्यंत क्रुद्ध हुए।

प्रश्न 4

राम का कथन "होइहि केउ एक दास तुम्हहारा" उनके व्यक्तित्व की किस विशेषता को दर्शाता है? (क) कूटनीति और चतुराई (ख) विनम्रता और मर्यादा (ग) त्याग और समर्पण (घ) दृढ़ता और आत्मविश्वास

हल

सही उत्तर: (ख) विनम्रता और मर्यादा।

राम ने परशुराम के क्रोध के सामने स्वयं को सेवक बताते हुए कहा कि धनुष तोड़ने वाला आपका ही कोई दास होगा — यह अत्यंत विनम्र और मर्यादापूर्ण उत्तर है। राम न अहंकार से बोले, न डर से; बल्कि शालीन भाषा में स्थिति को संभाला।

कूटनीति (क) में स्वार्थ छिपा होता है; त्याग (ग) और दृढ़ता (घ) यहाँ की भाषा के अनुकूल नहीं।

उत्तर: (ख) विनम्रता और मर्यादा — राम ने स्वयं को सेवक कहकर अत्यंत विनम्रतापूर्वक स्थिति को संभाला।

प्रश्न 5

"सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने।।" लक्ष्मण के मुसकराने और उपहास भरे वचनों का क्या कारण था? (क) वे सभा में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहते थे। (ख) उन्हें राम के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करना था।

(ग) वे परशुराम की शक्ति से अनभिज्ञ थे। (घ) वे परशुराम को चुनौती देना चाहते थे।

हल

सही उत्तर: (घ) वे परशुराम को चुनौती देना चाहते थे।

लक्ष्मण ने जानबूझकर व्यंग्यपूर्वक कहा — 'बहु धनुहीं तोरीं लरिकाइ। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाइ।' यानी बचपन में हमने बहुत सी धनुहियाँ तोड़ी, आपने तो कभी ऐसा क्रोध नहीं दिखाया। यह परशुराम के क्रोध को सीधी चुनौती थी।

श्रेष्ठता सिद्ध करना (क) प्रत्यक्ष उद्देश्य नहीं; राम-प्रेम (ख) प्रेरणा हो सकती है पर उत्तर का कारण नहीं; अनभिज्ञता (ग) सही नहीं — लक्ष्मण की बात जानबूझकर उकसावे वाली थी।

उत्तर: (घ) वे परशुराम को चुनौती देना चाहते थे — लक्ष्मण ने व्यंग्य में बचपन की धनुहियाँ तोड़ने की बात कहकर परशुराम को सीधी चुनौती दी।

प्रश्नावली 9.2 — मेरी समझ मेरे विचार

प्रश्न 1

"अरध निमेष कलप सम बीता" पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए कि कविता में यह किसके संदर्भ में कहा गया है और क्यों?

हल

यह पंक्ति सीता के संदर्भ में कही गई है।

भाव: 'अरध निमेष' का अर्थ है आधा पल — पलक झपकने का आधा क्षण। 'कलप' यानी कल्प — ब्रह्मा का एक दिन (अरबों वर्ष)। इस प्रकार पंक्ति का अर्थ है: आधा पल कल्प के समान दीर्घ बीत रहा था।

कारण: परशुराम का कराल रूप और उनके क्रोध भरे वचन सुनकर सीता अत्यंत भयभीत हो गई थीं। उनके मन में यह चिंता थी कि परशुराम धनुष तोड़ने वाले को दंडित कर सकते हैं। इस भय और व्याकुलता में समय बीतना बंद-सा हो गया — प्रत्येक क्षण युग जैसा लंबा लग रहा था।

यह अतिशयोक्ति अलंकार का सुंदर उदाहरण है जो सीता की मनोस्थिति को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करता है।

उत्तर: यह पंक्ति सीता की मनःस्थिति के संदर्भ में है — परशुराम के क्रोध से भयभीत सीता के लिए आधा पल कल्प (अरबों वर्ष) के समान भारी बीत रहा था।

प्रश्न 2

"सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा।।" पंक्ति के आधार पर बताइए कि परशुराम द्वारा दी गई इस चेतावनी का सभा में उपस्थित राज-समाज पर क्या प्रभाव पड़ा होगा? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

हल

परशुराम ने स्पष्ट चेतावनी दी — जिसने धनुष तोड़ा हो वह सभा छोड़कर अलग हो जाए, अन्यथा सभी राजा मारे जाएंगे।

राज-समाज पर प्रभाव:

1. गहरा आतंक: पहले ही 'उठे सकल भय बिकल भुआला' से स्पष्ट था कि राजा भयभीत थे। इस चेतावनी ने भय को और गहरा कर दिया।

2. मौन और निष्क्रियता: 'अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं' — जनक तक जवाब देने में असमर्थ रहे; अन्य राजाओं की तो बात ही क्या।

3. कुटिल राजाओं में आनंद: 'कुटिल भूप हरषे मन माहीं' — कुछ स्वार्थी राजा मन-ही-मन प्रसन्न हुए कि शायद धनुष तोड़ने वाले (राम) को दंड मिले।

तर्क: परशुराम जाम्दग्न्य अपने क्रोध और शक्ति के लिए प्रसिद्ध थे। इक्कीस बार क्षत्रियों का विनाश करने वाले का नाम सुनकर राजागण पहले से डरे थे; उनकी प्रत्यक्ष धमकी ने सभा को स्तब्ध कर दिया।

उत्तर: परशुराम की चेतावनी से सभा में गहरा आतंक छा गया — राजा मूक हो गए, जनक भी डर से उत्तर न दे सके, जबकि कुटिल राजा मन-ही-मन प्रसन्न हुए।

प्रश्न 3

तुलसीदास ने राम और लक्ष्मण के माध्यम से एक ही परिस्थिति के प्रति दो अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ दिखाई हैं। आपकी दृष्टि में परशुराम के क्रोध को शांत करने के लिए राम का 'विनय' का मार्ग उचित है या लक्ष्मण के 'तर्क' का? अपने उत्तर का उचित कारण और तर्क भी प्रस्तुत कीजिए।

हल

राम का विनय का मार्ग और लक्ष्मण का तर्क — दोनों की प्रकृति और उद्देश्य भिन्न हैं।
राम का विनय: 'हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु' — राम के हृदय में न हर्ष था न विषाद। उन्होंने शांत भाव से कहा 'नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हहारा।' यह विनम्रता, आत्मसंयम और मर्यादा का आदर्श उदाहरण है। यह मार्ग दीर्घकाल में प्रभावी और सम्माननीय है।
लक्ष्मण का तर्क: लक्ष्मण ने व्यंग्य से कहा 'बहु धनुहीं तोरीं लरिकाइ। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाइ।' यह साहसी है लेकिन स्थिति को और तनावपूर्ण बनाता है।
राम का विनय का मार्ग अधिक उचित है क्योंकि — एक कुशल नेता संकट में धैर्य और विवेक से काम लेता है; क्रोध को क्रोध से शांत करना संभव नहीं; विनम्रता से परशुराम का क्रोध अंततः शांत हुआ।

उत्तर: राम का विनय का मार्ग अधिक उचित है — संकट में धैर्य, विनम्रता और मर्यादापूर्ण व्यवहार ही दीर्घकालिक समाधान देता है; तर्क से क्रोध और बढ़ता है।

प्रश्न 4

'हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु॥' श्री राम के हृदय में न हर्ष था, न विषाद। यह उनके व्यक्तित्व के किन गुणों को दर्शाता है? उनका भावनात्मक संतुलन इस पूरे पाठ में उन्हें अन्य पात्रों से अलग कैसे स्थापित करता है?

हल

राम के गुण: यह पंक्ति राम के धीर, गंभीर, समभावी और आत्मसंयमी स्वभाव को दर्शाती है।
न हर्ष — वे परशुराम के भय से विचलित नहीं, न भीड़ और राजाओं के सामने फूले हुए।
न विषाद — वे घबराए नहीं, खिन्न नहीं हुए।
यह समभाव (equanimity) उनका सबसे बड़ा गुण है जो उन्हें उत्तम शासक और आदर्श पुरुष बनाता है।
अन्य पात्रों से अंतर:
- परशुराम: क्रोध की अति — रोष में अंधे होकर बोलते हैं।
- लक्ष्मण: उत्साह और तर्क में भावनात्मक संतुलन नहीं — व्यंग्य से स्थिति उग्र करते हैं।
- राजागण: भय से कांपते हैं।
- जनक: भय से मौन हो जाते हैं।
राम अकेले ऐसे पात्र हैं जो न भयभीत हैं, न क्रोधित, न उत्तेजित — वे स्थिर चित्त से उचित वचन बोलते हैं।

उत्तर: राम का भावनात्मक संतुलन — न हर्ष, न विषाद — उनके धैर्य, समभाव और आत्मसंयम का प्रतीक है। अन्य पात्र भय, क्रोध या उत्तेजना में थे; राम अकेले स्थिरचित्त रहे।

प्रश्नावली 9.3 — कविता का सौंदर्य — संवादों की विशेषता

प्रश्न 1

कविता में संवादों की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं। प्रत्येक विशेषता को दर्शाने वाली पंक्तियाँ कविता से ढूँढ़कर लिखिए: (i) राम की विनम्रता (ii) परशुराम का रौद्र रूप (iii) लक्ष्मण का प्रत्युत्तर (iv) पौराणिक संदर्भ (v) नाटकीयता

हल

(i) राम की विनम्रता:

"नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।। आयसु काह कहिअ किन मोही।"

राम ने स्वयं को दास कहकर और परशुराम को 'नाथ' संबोधित करके परम विनम्रता दिखाई।

(ii) परशुराम का रौद्र रूप:

"अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा।। बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू। उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू।।"

परशुराम ने क्रोध में जनक को 'जड़' और 'मूढ़' कहा तथा राज्य उलट देने की धमकी दी।

(iii) लक्ष्मण का प्रत्युत्तर:

"बहु धनुहीं तोरीं लरिकाइ। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाइ।। एहि धनु पर ममता केहि हेतू।"

लक्ष्मण ने व्यंग्यपूर्वक बचपन में धनुहियाँ तोड़ने की बात कही और परशुराम की इस धनुष पर विशेष ममता पर प्रश्न उठाया।

(iv) पौराणिक संदर्भ:

"सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।"

परशुराम ने सहस्रबाहु (सहस्रार्जुन) का संदर्भ दिया जो उनके पुराने शत्रु थे।

"धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार।।"

परशुराम ने शिव (तिपुरारि) के धनुष की महिमा का पौराणिक संदर्भ दिया।

(v) नाटकीयता:

"सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने।।"

परशुराम के क्रोध पर लक्ष्मण का मुसकराना और उपहास भरे वचन बोलना — यह अत्यंत नाटकीय क्षण है जो संवाद में तनाव और रोचकता दोनों बढ़ाता है।

उत्तर: (i) राम — 'नाथ संभुधनु भंजनिहारा।' (ii) परशुराम — 'अति रिस बोले बचन कठोरा।' (iii) लक्ष्मण — 'बहु धनुहीं तोरीं लरिकाइ।' (iv) 'सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।' (v) 'सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने।'

प्रश्नावली 9.4 — भाव-पहचान एवं विश्लेषण

प्रश्न 1

नीचे दिए गए छः भावों/मनःस्थितियों के लिए कविता से संबंधित पंक्तियाँ चिह्नित कीजिए और बताइए कि यह भाव किस पात्र से संबंधित है तथा उसकी इस मनःस्थिति का कारण क्या है? भाव: (1) चिंता, (2) क्रोध, (3) व्याकुलता, (4) भय, (5) संयम/विनम्रता, (6) ईर्ष्या/कुटिलता

हल

(1) चिंता:
पंक्ति: 'बिधि अब सँवरी बात बिगारी।' / 'मन पछिताति सीय महतारी।'
पात्र: सीता की माता सुनयना।
कारण: परशुराम का कोप देखकर सुनयना को चिंता हुई कि विधाता ने बनी-बनाई बात बिगाड़ दी — सीता का स्वयंवर और भविष्य खतरे में पड़ गया।
(2) क्रोध:
पंक्ति: 'अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा।।'
पात्र: परशुराम।
कारण: अपने परम आराध्य शिव का धनुष किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा खंडित देखकर परशुराम तीव्र क्रोध में आ गए।
(3) व्याकुलता:
पंक्ति: 'भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता। अरध निमेष कलप सम बीता।।'
पात्र: सीता।
कारण: परशुराम के रौद्र स्वभाव का वर्णन सुनकर सीता इतनी व्याकुल हो गईं कि आधा पल भी कल्प (अरबों वर्ष) के समान लंबा लग रहा था।
(4) भय:
पंक्ति: 'उठे सकल भय बिकल भुआला।' / 'सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु।'
पात्र: सभा के राजागण।
कारण: परशुराम का भयंकर रूप और उनके क्रोधपूर्ण वचन सुनकर सभी राजा भयभीत हो गए।
(5) संयम/विनम्रता:
पंक्ति: 'हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु॥' / 'नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हहारा।।'
पात्र: राम।
कारण: राम ने परशुराम के क्रोध के सामने न घबराकर, न हर्षित होकर — पूरे संयम के साथ विनम्र वचन बोले। उनका उद्देश्य स्थिति को शांत करना था।
(6) ईर्ष्या/कुटिलता:
पंक्ति: 'कुटिल भूप हरषे मन माहीं।'
पात्र: कुटिल राजागण।
कारण: जनक के डर से चुप रहने पर कुटिल राजा मन-ही-मन प्रसन्न हुए — ईर्ष्यावश वे चाहते थे कि धनुष तोड़ने वाले (राम) को दंड मिले।

उत्तर: (1) चिंता — सुनयना, सीता के भविष्य की चिंता। (2) क्रोध — परशुराम, शिव-धनुष खंडित होने से। (3) व्याकुलता — सीता, परशुराम का रौद्र रूप सुनकर। (4) भय — राजागण, परशुराम के कराल रूप से। (5) संयम/विनम्रता — राम, स्थिति को विनम्रतापूर्वक संभाला। (6) ईर्ष्या/कुटिलता — कुटिल राजा, राम को दंड मिले इसकी कामना।

प्रश्न 2

"अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं।" परशुराम के पूछने पर जनक का मौन भयजनित है या विवेकपूर्ण निर्णय? संवाद की स्थिति के आधार पर विश्लेषण कीजिए।

हल

संदर्भ: परशुराम ने जनक से क्रोध में पूछा — 'कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा।' इस पर जनक ने कोई उत्तर नहीं दिया।

विश्लेषण — भयजनित या विवेकपूर्ण?

पाठ के अनुसार 'अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं' — 'अत्यंत डर के कारण राजा (जनक) उत्तर नहीं दे रहे।' यह स्वयं तुलसीदास की पंक्ति है जो स्पष्ट रूप से भय का संकेत करती है।

तर्क 1 (भयजनित): परशुराम का तेजस्वी रूप, क्रोधपूर्ण वचन और इक्कीस बार क्षत्रियों के विनाश की ख्याति — ये सुनकर जनक जैसे बुद्धिमान राजा भी भयभीत हो सकते हैं।

तर्क 2 (विवेकपूर्ण पहलू): जनक ने यह भी सोचा होगा कि यदि उन्होंने राम का नाम लिया तो परशुराम का क्रोध राम पर टूट सकता है — इस दृष्टि से मौन एक सुरक्षात्मक निर्णय भी कहा जा सकता है।

निष्कर्ष: पाठ में 'अति डरु' स्पष्ट लिखा है, इसलिए जनक का मौन मुख्यतः भयजनित था। हालाँकि इसमें अप्रत्यक्ष रूप से राम की सुरक्षा का विवेक भी निहित हो सकता है।

उत्तर: जनक का मौन मुख्यतः भयजनित था ('अति डरु' — पाठ का सीधा संकेत); किंतु इसमें राम को परशुराम के क्रोध से बचाने का अप्रत्यक्ष विवेक भी हो सकता है।

प्रश्न 3

काव्य-पंक्ति और भाव: "रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार। धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार॥" (क) यदि आप इन पंक्तियों को मंच पर बोलते, तो आपके चेहरे पर कौन-सा भाव होता? (ख) इस कविता में प्रत्येक पात्र एक अलग भाव का प्रतिनिधि बन जाता है। निम्नलिखित पात्रों को कौन-कौन से भावों द्वारा प्रदर्शित करेंगे — परशुराम, राजा जनक, लक्ष्मण, राम, सभा में उपस्थित अन्य राजा।

हल

(क) ये पंक्तियाँ परशुराम के अत्यंत क्रोधित वचन हैं — 'रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार' (अरे राजकुमार! काल के वश में होकर बोल रहे हो, तुम्हें होश नहीं)।

मंच पर इन्हें बोलते समय रौद्र (क्रोध का) भाव होगा — आँखें लाल, भौहें चढ़ी, स्वर उच्च और तीखा।

(ख) पात्र और उनके भाव:

परशुराम — रौद्र (तीव्र क्रोध): शिव-धनुष खंडित देखकर उनमें विकराल क्रोध उत्पन्न हुआ।

राजा जनक — भय (और संयम): परशुराम के कोप से डरे हुए, उत्तर देने में असमर्थ।

लक्ष्मण — वीर (और व्यंग्य): निडर होकर परशुराम को चुनौती देने वाले — 'बहु धनुहीं तोरीं लरिकाइ।'
राम — शांत (समभाव/धीरोदात्त): न हर्ष, न विषाद — स्थिरचित्त विनम्र वचन बोलने वाले।
सभा में अन्य राजा — भय और विस्मय: परशुराम का रूप देखकर भयभीत, स्थिति देखकर स्तब्ध।

उत्तर: (क) मंच पर रौद्र (क्रोध) का भाव। (ख) परशुराम=रौद्र, जनक=भय/संयम, लक्ष्मण=वीर/व्यंग्य, राम=शांत/समभाव, अन्य राजा=भय/विस्मय।

प्रश्नावली 9.5 — व्याकरण की बात — काव्य-विशेषताएँ

प्रश्न 1

कविता में परशुराम को भृगुपति, परसुधर, भृगुकुलकेतू जैसे विभिन्न नामों से संबोधित किया गया है। कविता में निम्नलिखित विशेषताओं के लिए एक-एक अतिरिक्त उदाहरण दीजिए (पाठ में दिए गए उदाहरण के अतिरिक्त): विशेषता | अर्थ | दिया गया उदाहरण अनुप्रास अलंकार | एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति | अरि करनी करि करिअ लराई अतिशयोक्ति अलंकार | बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना | अरध निमेष कलप सम बीता रूपक अलंकार | रूप का आरोपण करना | पद सरोज मेले दोउ भाई

हल

अनुप्रास अलंकार (एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति):
उदाहरण: 'सुर मुनि नाग नगर नर नारी' — 'न' वर्ण की बार-बार आवृत्ति है।
अतिशयोक्ति अलंकार (बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना):
उदाहरण: 'बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू। उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू।।' — 'जहाँ तक तेरा राज्य है वहाँ तक पृथ्वी उलट दूंगा' — यह अतिशयोक्ति है।
रूपक अलंकार (रूप का आरोपण):
उदाहरण: 'रूप अपार मार मद मोचन' — राम के रूप को काम (कामदेव) के मद (अहंकार) को नष्ट करने वाला कहा गया है, यहाँ रूपक है।

उत्तर: अनुप्रास: 'सुर मुनि नाग नगर नर नारी' (न-वर्ण)। अतिशयोक्ति: 'उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू।' रूपक: 'मार मद मोचन' (राम-रूप = काम-मद-नाशक)।

प्रश्नावली 9.6 — बहुभाषिकता — अवधी शब्द और खड़ी बोली रूप

प्रश्न 1

यह कविता अवधी भाषा में लिखी गई है। कविता में से अवधी शब्दों को पहचान कर उनके खड़ी बोली हिंदी रूप लिखिए (दिए गए उदाहरण 'कोही→क्रोधी' और 'वेषु→वेष' के अतिरिक्त कम से कम छः और शब्द)।

हल

अवधी शब्द → खड़ी बोली हिंदी रूप:

1. बिकल → व्याकुल, बेचैन
2. भुआला → भूपाल, राजा
3. सुभायँ → स्वभाव से
4. बहोरि → फिर, पुनः
5. आसिष → आशीर्वाद
6. ढोटा → पुत्र, बेटा
7. रिस → रोष, क्रोध
8. बेगि → शीघ्र, जल्दी
9. जहँ → जहाँ
10. परसु → परशु (फरसा)
11. लरिकाइ → लड़कपन, बाल्यावस्था
12. अरध → आधा

उत्तर: बिकल→व्याकुल, भुआला→राजा, सुभायँ→स्वभाव से, बहोरि→फिर/पुनः, आसिष→आशीर्वाद, ढोटा→पुत्र, रिस→क्रोध, बेगि→शीघ्र, जहँ→जहाँ, परसु→परशु, लरिकाइ→लड़कपन, अरध→आधा।

प्रश्नावली 9.7 — लोक में भाषा — लोकोक्तियाँ

प्रश्न 1

नीचे कोष्ठक में कविता से कुछ शब्द चुनकर दिए गए हैं — मन, राम, राजा, बात, सिरु (सिर)। इन शब्दों से संबंधित लोकोक्तियाँ और उनका अर्थ लिखकर स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए। (उदाहरण: मन — 'मन के जीते जीत है, मन के हारे हार' — आत्मविश्वास, साहस और मनोबल से सफलता निश्चित है।) शेष चार शब्दों — राम, राजा, बात, सिरु (सिर) — के लिए लोकोक्तियाँ लिखिए।

हल

1. राम:
लोकोक्ति: 'राम मिलाई जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी।'
अर्थ: विधाता ने ऐसे दो व्यक्तियों का मेल कर दिया जो दोनों एक जैसे हैं।
प्रयोग: उन दोनों की जोड़ी देखकर कहना पड़ता है — 'राम मिलाई जोड़ी।'
2. राजा:
लोकोक्ति: 'जैसा राजा वैसी प्रजा।'
अर्थ: शासक जैसा होगा, उसकी प्रजा का आचरण भी वैसा ही होगा।
प्रयोग: स्कूल के मॉनिटर का स्वभाव देखकर पता चलता है कि पूरी कक्षा कैसी है — 'जैसा राजा वैसी प्रजा।'
3. बात:
लोकोक्ति: 'बात निकली तो दूर तलक जाएगी।'
अर्थ: एक बार कोई बात कही जाए तो वह फैल जाती है, वापस नहीं होती।
प्रयोग: जो बात सोचकर बोलनी चाहिए थी, बिना सोचे बोल दी — अब 'बात निकली तो दूर तलक जाएगी।'
4. सिर (सिरु):
लोकोक्ति: 'सिर मुँडाते ही ओले पड़े।'
अर्थ: कोई काम शुरू करते ही मुसीबत आ जाए।
प्रयोग: नई दुकान खोलते ही बाढ़ आ गई — 'सिर मुँडाते ही ओले पड़े।'

उत्तर: राम: 'राम मिलाई जोड़ी' — अनोखा मेल। राजा: 'जैसा राजा वैसी प्रजा' — नेता का प्रभाव प्रजा पर। बात: 'बात निकली तो दूर तलक जाएगी' — बात को वापस नहीं लिया जा सकता। सिर: 'सिर मुँडाते ही ओले पड़े' — शुरुआत में ही संकट।

प्रश्नावली 9.8 — गद्य-रूप

प्रश्न 1

नीचे दी गई चौपाई को गद्य-रूप में लिखिए: "अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं।। सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी।।"

हल

गद्य-रूप:

अत्यधिक भय के कारण राजा जनक कोई उत्तर नहीं दे पा रहे थे। (उनका मौन देखकर) कुटिल और स्वार्थी राजा मन-ही-मन प्रसन्न हो रहे थे।

देवता, मुनि, नाग, नगरवासी, स्त्री-पुरुष — सभी इस स्थिति को देखकर चिंतित थे और उनके हृदय में भारी भय व्याप्त था।

व्याख्या: 'अति डरु' = अत्यधिक डर; 'उतरु देत नाहीं' = उत्तर नहीं दे पाते; 'कुटिल भूप' = कुटिल राजागण; 'हरषे मन माहीं' = मन ही मन प्रसन्न हुए; 'सुर मुनि नाग' = देवता, ऋषि-मुनि और नाग; 'त्रास उर भारी' = हृदय में भारी भय।

उत्तर: अत्यंत भय के कारण राजा जनक उत्तर न दे सके। कुटिल राजा मन-ही-मन प्रसन्न हुए। देवता, मुनि, नाग, नगरवासी, नर-नारी — सभी के हृदय में भय का भारी बोझ था।

प्रश्नावली 9.9 — गतिविधि — कौन-सा कथन किसका

प्रश्न 1

यह कविता संवाद का सुंदर उदाहरण है। तालिका में दिए गए कथनों को पढ़कर बताइए कि कौन-सा कथन किसका हो सकता है। सही (✓) का चिह्न लगाइए— कथन: 1. शिव के धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई दास ही हो सकता है। 2. विधाता ने बनी-बनाई बात बिगाड़ दी। 3. सेवक वह होता है जो सेवा का काम करे। 4. इस कारण ये सब राजा आए हैं। 5. बचपन में हमने ऐसी बहुत-सी धनुहियाँ तोड़ डाली हैं। 6. क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते? 7. कहो जनक, किस कारण यह भीड़ है? 8. इसी धनुष पर इतनी ममता क्यों! (पात्र: राम, लक्ष्मण, परशुराम, जनक, सीता की माता सुनयना)

हल

1. 'शिव के धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई दास ही हो सकता है।' → राम
('नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हहारा।' — राम ने विनम्रतापूर्वक कहा।)
2. 'विधाता ने बनी-बनाई बात बिगाड़ दी।' → सीता की माता सुनयना
('बिधि अब सँवरी बात बिगारी।' — सुनयना की मनःस्थिति।)
3. 'सेवक वह होता है जो सेवा का काम करे।' → परशुराम
('सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई।' — परशुराम ने राम के 'दास' कहने पर व्यंग्य में यह कहा।)
4. 'इस कारण ये सब राजा आए हैं।' → जनक
(जनक ने परशुराम को स्वयंवर का समाचार दिया — 'समाचार कहि जनक सुनाए। जेहि कारन महीप सब आए।')
5. 'बचपन में हमने ऐसी बहुत-सी धनुहियाँ तोड़ डाली हैं।' → लक्ष्मण
('बहु धनुहीं तोरीं लरिकाइ। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाइ।' — लक्ष्मण का व्यंग्यपूर्ण उत्तर।)
6. 'क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते?' → राम
('आयसु काह कहिअ किन मोही।' — राम ने विनम्रता से पूछा।)
7. 'कहो जनक, किस कारण यह भीड़ है?' → परशुराम
('बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहहु काह अति भीर।' — परशुराम ने जनक से पूछा।)
8. 'इसी धनुष पर इतनी ममता क्यों!' → लक्ष्मण
('एहि धनु पर ममता केहि हेतू।' — लक्ष्मण ने व्यंग्य से पूछा।)

उत्तर: 1→राम, 2→सुनयना, 3→परशुराम, 4→जनक, 5→लक्ष्मण, 6→राम, 7→परशुराम, 8→लक्ष्मण।